॥ॐ॥

।।ॐ श्री परमात्मने नमः।।

॥श्री गणेशाय नमः॥

रात्रि सूक्त

विषय-सूची

रात्रिसूक्त 3

रात्रिसूक्त

[ऋग्वेद १०।१२७]

ऋग्वेद के दशम मण्डल का १२७वाँ सूक्त रात्रिसूक्त कहलाता है, इसमें आठ ऋचाएँ पठित हैं, जिनमें रात्रिदेवी की महिमा का वर्णन किया गया है। इस सूक्त के कुशिक, सौभर ऋषि, रात्रिर्वा भारद्वाजी देवता और गायत्री छन्द हैं:

ॐ रात्री व्यख्यदायती पुरुत्रा देव्यक्षभिः।
विश्वा अधि श्रियोऽधित ॥१॥

अनेक देशों पर विस्तृत होकरआती हुई नक्षत्र रूप देवी रात्रि समस्त संसार को देखतीं हैं तथा सभी प्रकार के शोभा सौंदर्य को धारण करती हैं। ।। १ ।।

ओर्वप्रा अमत्र्यानिवतो देव्युद्वतः।
ज्योतिषा बाधते तमः ॥२॥

अविनाशी देवी रात्रि प्रथम अंतरिक्ष और उसके पश्चात समस्त ऊंचे तथा नीचे प्रदेशों को आच्छादित करती हैं। और फिर ग्रहण नक्षत्र आदि तेज से अन्धकार को नष्ट करती हैं। ॥२॥

निरु स्वसारमस्कृतो षसं देव्यायती।
अपेद् हासते तमः ॥३॥

देवी रात्रि अपनी भगिनी उषा देवी को प्ररिग्रहीत करती हैं और उषाकाल में अन्धकार स्वतः ही नष्ट हो जाता है। ॥३॥

सा नो अद्य यस्या वयं नि ते यामन्नविक्ष्महि ।
वृक्षे न वसतिं व्रयः ॥४॥

जिस प्रकार रात्रि काल में पक्षी वृक्ष पर निवास करते हैं, वैसे ही उनके आने पर हम सुखपूर्वक अपने गृह में आश्रय लेते हैं। वह रात्रि देवी हम पर प्रसन्न हों। ॥४॥

नि ग्रामासो अविक्षत नि पद्वन्तो नि पक्षिणः।
नि श्येनासश्चिदर्शिनः ॥५॥

उन करुणामयी रात्रिदेवी के अंकमें सम्पूर्ण ग्रामवासी मनुष्य, पैरों से चलने वाले- गाय, घोड़े आदि पशु, पंखों से उड़नेवाले पक्षी एवं पतंग आदि, किसी प्रयोजन से यात्रा करनेवाले पथिक और बाज आदि भी सुखपूर्वक सोते हैं ॥५॥

यावया वृक्यं वृकं यवय स्तेनमूर्ये।
अथा नः सुतरा भव ॥६॥

हे रात्रिमयी इच्छा शक्ति! तुम कृपा करके वासनामयी वृको तथा पापमय वृकों को हमसे अलग करो। काम आदि तस्कर समुदाय

को भी दूर हटाओ। तदनन्तर हमारे लिये सुखदायिनी, मोक्षदायिनी एवं कल्याणकारिणी बन जाओ॥६॥

उप मा पेपिशत तमः कृष्णं व्यक्तमस्थित।
उघ ऋणेव यातय॥७॥

हे उषा! हे रात्रि की अधिष्ठात्री देवी ! सब ओर फैला हुआ यह अज्ञानमय काला अन्धकार मेरे निकट आ पहुँचा है। तुम इसे ऋणकी भाँति दूर करो-जैसे धन देकर अपने भक्तों के ऋण दूर करती हो, उसी प्रकार ज्ञान देकर इस अज्ञान को भी दूर हटा दो॥ ७ ॥

उप ते गा इवाकरं वृणीष्व दुहितर्दिवः।
रात्रि स्तोमं न जिग्युषे ॥८॥

हे रात्रिदेवी! तुम दूध देनेवाली गौके समान हो। मैं तुम्हारे समीप आकर स्तुति आदि से तुम्हें प्राप्त करूँ। सूर्यपुत्री ! तुम्हारी कृपा से मैं काम आदि शत्रुओंको जीत चुका हूँ, तुम स्तोम की भाँति मेरे इस हविष्य को भी ग्रहण करो ॥८॥

संकलनकर्ता:

श्री मनीष त्यागी

संस्थापक एवं अध्यक्ष

श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

www.shdvef.com

।।ॐ नमो भगवते वासुदेवाय:।।